आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2229 • उदयपुर, शनिवार 30 जनवरी, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

मेजर जनरल इयान कार्डोजो बटालियन को कमांड करने वाले पहले डिसएबल्ड अफसर

भारतीय सेना के जांबाज मेजर इयान कार्डोजो ने 1971 में बांग्लादेश के सिलहट की लड़ाई में पाकिस्तानी सैनिकों के छक्के छुड़ा दिए थे। युद्ध में पाकिस्तानी सेना के खिलाफ लड़ते हुए उनका एक पैर लैंड माइन ब्लास्ट में बुरी तरह जख्मी हो गया था।

इलाज नहीं मिला तो उन्होंने अपने गोरखा साथी से कहा कि खुखरी लाकर पैर काट दो, लेकिन वो इसके लिए तैयार नहीं हुआ। इसके बाद उन्होंने खुद ही हिम्मत दिखाई और खुखरी से अपना पैर काटकर शरीर से अलग कर दिया। उस कटे पैर को वहीं जमीन में गाड़ दिया था।

गोरखा रेजीमेंट के मेजर कार्डोजो बाद में भारतीय सेना पहले डिसएबल्ड अफसर बने, जिन्होंने पहले बटालियन फिर ब्रिगेड कमांड किया। सरकार ने पाक युद्ध में बहादुरी के लिए उन्हें सेना मेडल से नवाजा था। एक बार पाकिस्तान के एक युद्धबंदी सर्जन मेजर मोहम्मद बशीर को उनका ऑपरेशन करने का आदेश मिला था।

पहले तो उन्होंने ऑपरेशन कराने से मना कर दिया, लेकिन बाद में पता चला कि भारतीय सेना के पास कोई हेलिकॉप्टर उपलब्ध नहीं है तो वह पाकिस्तानी मेजर बशीर से ऑपरेशन कराने के लिए तैयार हो गए। मेजर जनरल कार्डोजो 1993 में सेना से रिटायर हुए।

बेंगलुरु दुनिया में तेजी से बढ़ते आइटी शहरों में नंबर वन

बेंगलुरू दुनिया के सबसे तेजी से बढते प्रौद्योगिकी केंद्र यानी आइटी हब के रूप में उभरा हैं। लंदन की अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश एजेंसी डीलरूम. कॉम की रिपोर्ट में इसका खुलासा किया गया है। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई छठे नंबर पर है। यूरोपीय शहरों में दूसरे नंबर पर लंदन है। तीसरे नंबर पर म्युनिख, चौथे पर बर्लिन और पांचवे स्थान पर पेरिस हैं। बेंगलुरू को नंबर वन बनाने में ब्रिटेन की आइटी कंपनियों का अरबों रुपए का निवेश जिनमें एडटेक और फिनटेक कंपनियां प्रमुख वजह है।

यहां छठे नंबर पर बेंगलुरू : टेक्नोलॉजी वेंचर कैपिटल (वीसी) निवेश में बेंगलुरू छठे स्थान पर है। बीजिंग पहले व दूसरे स्थान पर सैन फ्रांसिस्को, तीसरे पर न्यूयार्क, चौथे पर शंघाई व पांचवे स्थान पर लंदन है। मुंबई 21 वें स्थान पर है।

ऐसे समझिए .... कैसे बना नंबर वन

बेंगलुरू – 540 प्रतिशत
1.3 अरब डॉलर से बढ़कर 2020 में 7.2 अरब डॉलर का हुआ निवेश।

मुंबई– 170 प्रतिशत
70 करोड़ डॉलर से बढ़कर 2020 में 1.2 अरब डॉलर हुआ निवेश।

लंदन –300 प्रतिशत
ब्रिटेन की राजधानी लंदन में निवेश 3.5 अरब डॉलर से बढ़कर 10.5 अरब डॉलर पर पहुंच गया।

टैलेंट पूल– 100 से अधिक अच्छे इंजीनियरिंग कॉलेज।

90,000 इंजीनियरिंग ग्रेजुएटस निकलते हर साल।

युवाओं के लिए अवसर
- आइटी क्षेत्र में नौकरियों के पहले से ज्यादा अवसर।
- कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आने से अच्छा पैकेज।
- अन्य संबंधित नौकरियों के लिए अच्छा विकल्प।

सेवा पथ पर आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

मुंह को मिला निवाला

उदयपुर के पायड़ा क्षेत्र में कालका माता रोड़ पर किराए की एक छोटी सी दुकान में लोगों के कपड़ों पर प्रेस कर बरसों से घर परिवार का गुजारा कर रहे श्री धनराज धोबी अपनी 45 साल की जिंदगी में दुःखों से रूबरू भी हुए पर वे कहते हैं कि कोरोना की महामारी ने सबको भयभीत तो किया ही, लेकिन लॉकडाउन से उत्पन्न हालातों की तो किसी ने कल्पना भी नहीं की थी।

काम बंद हो गया, मुंह का निवाला छूट गया। हालात को सम्भालते के लिए वे नारायण सेवा संस्थान का आभार मानते हैं, जो पिछले 6–7 माह से नियमित रूप से उनके घर मासिक राशन भेज रहा है। धनराज दम्पती अपने चार बच्चों के साथ खुश है और यह सब सम्भव हुआ करुण हृदय दानदाताओं को वजह से, जिनके दान से संस्थान आज अनेक नगरों– महानगरों में हजारों गरीबों तक नियमित राशन पहुंचा पा रहा है।

झल्लारा, उदयपुर में दिव्यांग जांच चयन उपकरण वितरण शिविर

भारत सरकार की एडीप योजना के अंतर्गत नारायण सेवा संस्थान का सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के सहयोग से पंचायत समिति झल्लारा में दिव्यांगता जाँच, चयन एवं उपकरण वितरण शिविर आयोजित हुआ। जिसका उद्घाटन मुख्य अतिथि विकास अधिकारी श्रीमान प्रवीण जी गुप्ता ने दीप प्रज्वलन कर किया। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि शिविर में आए 33 रोगियों की जांच व चिकित्सा डॉ मानस रंजन जी साहू ने की।

शिविर में प्रधान श्रीमान धुलीराम जी मीणा एवं उपप्रधान श्री नरेन्द्र कुमार जी पटेल, श्री हरीश जी मीणा आदि कई गणमान्य मेहमान उपस्थित थे। शिविर प्रभारी हरिप्रसाद जी लड्ढा ने जनप्रतिनिधियों और अतिथियों का अभिनंदन किया। शिविर में 05 दिव्यांगजन को ट्राईसाइकिल, 08 को व्हीलचेयर, 08 को वैशाखी और कैलीपर्स भेंट किए ओर दिव्यांगों का शल्य चिकित्सा के लिए चयनित किया। शिविर में लोगर जी डांगी, मोहन जी मीणा ने भी सेवाएं दी।

क्या भूलूं क्या याद करूँ

इस अवतरण को जब भी लिखने बैठती हूँ तो बस एक चेहरा सामने आ जाता है,.....कैलाश 'मानव' का.....

इतनी घटनाएं जुड़ी हैं या यों कहिए 'मानव' इतने जुनून से जुड़े हैं संस्था के साथ, या यों कहिए संस्था जुड़ी है उनसे जुनून के साथ.... कुछ भी कहिए परन्तु नारायण सेवा संस्थान एक जुनून का नाम है, एक नशे का नाम है। वह नशा जो श्री 'मानव' के सिर चढ़ कर बोलता है, 'सेवा का नशा' और सच ही है जब इतना दर्द हो दिल में दुखियों के लिए, इतनी पीड़ा हो कि दर्द उसे हो और आँसू श्री मानव के निकलें .....तभी तो हो पाता है, इतने वृहद रूप से सेवा का काम इतने दिव्यांगों का निःशुल्क ऑपरेशन व अन्य कई–कई सेवा कार्य..

एक अकेला इन्सान स्वयं बहुत कुछ करना चाहता है, परन्तु एक सहयोगी समाज की आवश्यकता होती है उस बहुत कुछ की पूर्ति के लिए..... श्री 'मानव' ने हम सभी के दिलों में गहरे सेवा के जज्बात जो दबे हुए थे उन्हें बाहर निकाला है और निश्चित ही उन्हीं कोमल जज्बातों ने इतने बड़े रूप में सेवा कार्य करवाए।

श्री मानव संस्थान के कार्य की वजह से बहुत व्यस्त रहते हैं। कभी–कभी अपने व नजदीकी लोगों से लम्बी बात करने का वक्त नहीं निकाल पाते परन्तु मैंने देखा कि हर पीड़ित को वे गले लगाकर मिलते हैं उसकी बात सुनते हैं और उस समय हर सम्भव जो मदद हो सकती है, करते हैं। कभी–कभी तो अपना पूरा पर्स ही खाली कर देते हैं, अगर कुछ खा रहे तो सभी को बांट देते हैं, उनके रोम–रोम में बसी है करूणा, दया, प्रेम।

सोते वक्त रात में जब भी नींद खुल जाएगी बस उसी वक्त उठकर संस्थान के कार्य करना शुरू। किसी से भी बात किसी अन्य टॉपिक पर करेंगे पर कुछ ही क्षणों बाद आ जाएंगे नारायण सेवा की बातों पर।

मुझे तो लगता है उनकी हर सांस नारायण सेवा का नाम जरूर लेती है।

अद्भुत व्यक्तित्व हैं, बहुत अद्भुत ..... बहुत कुछ है आपसे कहने को श्री 'मानव' के बारे में, उनकी सेवा के बारे में, उनके जुनून के बारे में।

– कल्पना गोयल

सच्ची पूजा

एक बार संत राबिया बेतहाशा सड़क पर भागी जा रही थी। उनके हाथ में पानी से भरा प्याला था और दूसरे में जलती मशाल। लोगों ने उन्हें इस तरह देखा तो हैरत में पड़ गए। आमतौर पर राबिया अध्यात्म का कोई गूढ़ तथ्य समझाने के लिए विचित्र कहानियों और रूपकों का प्रयोग करती थी, लेकिन यह आचरण सबसे अलग था। लोग कुछ पूछें इसकी गुंजाइश भी नहीं थी क्योंकि क्योंकि वह तेजी से दौड़ती जा रही थी और साथ में कुछ कहती भी जा रही थी। हालांकि जिस किसी ने ध्यान दिया उसने राबिया के वचनों को सुना। वह कह रही थी कि मैं स्वर्ग को जला देना और नरक को पानी में डुबो दना चाहती हूं। सुनने वालों को समझ में नही आया कि ऐसा कहने के पीछे आशय क्या है। राबिया की बात का मर्म जानने की उत्सुकता हर किसी में थी। लोग उनका सम्मान करते थे और उनकी बातें बड़ी गंभीरता से सुनते थे। इसलिए कई और लोग उनके पीछे–पीछे दौड़ने लगे। एक जगह एक बुजुर्ग फकीर ने राबिया को रोका और पूछा कि वह ऐसा क्यों करना चाहती है। राबिया ने कहा, 'मैं स्वर्ग को जलाना और नरक को डुबाना इसलिए चाहती हूं कि लोग सही मायने में धार्मिक हो सकें। लोग जन्नत के लालच में नेक काम करते हैं या दोजख से डर कर बुरे कामों से बचते हैं। लालच और डर जहां हो वहां ईश्वर के प्रति सच्चा प्रेम नहीं हो सकता। स्वर्ग और नरक नहीं होगें तो लालच और डर मिट जाएगा और हम ऊपर वाले की बंदगी ज्यादा अच्छी तरह कर सकेंगे।

विकलांगों के लिए बड़े फैसलों के पीछे जावेद आबिदी की कोशिश

जावेद आबिदी विकलांगों के अधिकारों के लिए मुहिम चलाने वाले भारत में पहले व्यक्ति थे। 2018 में उनका निधन हो गया। उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में पैदा हुए जावेद को स्पाइन बिफिडा (रीढ़ की हड्डी से जुड़ी एक बीमारी) नाम की समस्या थी, जिसके चलते उन्हें 15 साल की उम्र से ही व्हीलचेयर का इस्तेमाल करना पड़ गया। बचपन में इसका इलाज न होने से उनको नर्वस सिस्टम को नुकसान पहुंचा।

आबिदी का परिवार उन्हें लेकर अमेरिका शिट हो गया। अपनी समस्याओं के बाद भी जावेद ने राइट स्टेट यूनिवर्सिटी से पढ़ाई पूरी की और भारत वापस आए। आबिदी ने 1996 में विकलांगों के रोजगार की व्यवस्था के लिए नेशनल सेंटर फॉर प्रमोशन ऑफ एंप्लॉयमेंट फॉर डिसएबल पीपल की स्थापना की थी। उनके प्रयासों से दिसंबर 2016 में विकलांगों से जुड़े कानून में काफी बदलाव किए गए, इसमें डिसेबिलिटी की परिभाषा भी बदली गई। इसके साथ ही उनके लिए नौकरी, सार्वजनिक जगहों पर आने जाने की सुविधाओं के नियमों में भी बदलाव हुआ है। 1993 में उन्होंने राजीव गांधी फाउंडेशन में काम करना शुरू किया। इसके बाद जावेद ने अपनी संस्था शुरू की जिसका लक्ष्य संसद में डिसएबल लोगों के लिए बिल लाना था। जावेद की अर्जी पर ही सुप्रीम कोर्ट ने पोलिंग बूथों को विकलांग के लिए सहज बनाने का निर्देश दिया था।

उनकी मुहिम के असर से ही लाल किला, कुतुब मीनार और ऐसी तमाम दूसरी ऐतिहासिक इमारतों पर व्हील चेयर रैंप लगाए गए। इसके अलावा जावेद साइन लैंग्वेज को आधिकारिक दर्जा दिलवाने, विकलांगों के उपकरणों को ळैज से बाहर रखने, शिक्षा, रोजगार, जानकारी बढ़ाने जैसे तमाम कामों में सक्रिय रहे। आबिदी की संस्था ने सिविल सर्विस परीक्षाओं में विकलांगों की भागीदारी सुनिश्चित करवाई।

कोमल सपनों को दे रहे हैं फौलादी 'जमीन'

लक्ष्य तक पहुंचने और सपनों को पूरा करने के लिए सही मागदर्शन की जरूरत होती है और इसके लिए एक अच्छे शिक्षक का होना जरूरी है। वह शिक्षक बने ग्वालियर के सुनील कुमार राठौड़। सुनील लड़कियों को फिजिकल ट्रेनिंग देते हैं, ताकि वे कठिन नौकरी मे भी खुद को आसानी से ढाल सकें। आज उनकी प्रशिक्षित 60 से अधिक लड़कियों मध्य प्रदेश पुलिस सहित कई विभागों मे काम कर रही हैं। सुनील ने वर्ष 2014 में अपना काम शुरू किया था। चार लड़कियों से शुरूआत के बाद वह अब तक 550 से अधिक लड़कियों और महिलाओं को ट्रेंड कर चुके है।

किसी भी भर्ती में फिजिकल फिटनेस मायने रखती है। सुनील ने खुद ग्राउंड में रनिंग ट्रेक बनाया, लॉन्ग जंप, शार्ट पुट, हाई जंप की ट्रेनिंग दी। साथ ही सेल्फ डिफेंस और योग की भी क्लास ली।

सेवा का यह काम आपके सहयोग के बिना कैसे होगा सम्भव

NARAYAN HOSPITALS

पशुवत जिन्दगी जी रहे दिव्यांग भाई बहिनों को अपने पांवों पर चलाने के लिए कृपया करें योगदान

ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)	ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)
501	1700000	40	151000
401	1401000	13	52500
301	1051000	05	21000
201	711000	03	13000
101	361000	01	5000

NARAYAN LIMBS & CALIPERS

रेंग रेंग कर चलने वाले दिव्यांगजनों को सहायक उपकरणों का सहयोग देकर बनाये सशक्त

सहायक उपकरण विवरण	सहयोग राशि (रूपये)
कृत्रिम अंग	10000
ट्राई साईकिल	5000
व्हील चेयर	4000
केलिपर	2000
बैसाखी	500

NARAYAN VOCATIONAL ACADEMY

दिव्यांगों को स्वावलम्बी बनाने के लिए संस्थान द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षणों में आपका अनुदान हो

मोबाईल/ कम्प्युटर/ सिलाई/ मेहन्दी प्रशिक्षण सांजन्य राशि	
30 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 225000 रू.	5 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 37500 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 150000 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 22500 रू.
10 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 75000 रू.	1 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 7500 रू.

दान सहयोग हेतु सम्पर्क करें - 0294-6622222, 7023509999

NARAYAN PARA SPORTS ACADEMY

प्रतिभावान दिव्यांग बन्धुओं को खेल प्रशिक्षण देने तथा खेल अकादमी स्थापित करने के लिए कृपया करें मदद

निर्माण सहयोगी बनें	51000 रू.

NARAYAN ROTI

प्यासे को पानी, भूखें को भोजन, बीमार को दवा, यही है नारायण सेवा– कृपया करें भोजन सेवा

विवरण (प्रतिदिन)	सहयोग राशि (रूपये)
नाश्ता, दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	37000
दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	30000
दोपहर अथवा रात का भोजन सहयोग	15000
केवल नाश्ता सहयोग	7000

वर्ष में एक दिन 151 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन सहयोग

NARAYAN EDUCATION ACADEMY

कृपया विद्या का दान देकर गरीब बच्चों का करें उद्धार

प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति वर्ष)	36000 रू.
प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति माह)	3000 रू.

NARAYAN APNA GHAR

जिनका कोई नहीं है इस दुनिया में..... ऐसे अनाथ बच्चों को ले गोद और उनकी शिक्षा में करें मदद

प्रति बालक (18 वर्ष तक) सहयोग	100000 रू.

NARAYAN COMMUNITY SEVA

दूरस्थ एवं आदिवासी क्षेत्रों में संस्थान की ओर से चलाई जा रही राशन वितरण, वस्त्र एवं पोशाक सेवा में मदद करें

50 मजदूर परिवार	100000 रू.
25 मजदूर परिवार	50000 रू.
5 मजदूर परिवार	10000 रू.
3 मजदूर परिवार	6000 रू.
1 मजदूर परिवार	2000 रू.

कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन

समाज में हेय दृष्टी से देखे जाने वाले दिव्यांग बन्धुंओं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए हम कृतसंकल्परत है कृपया सामाजिक सेवा में आप भी हमारे साथ आये।

प्रशांत अग्रवाल
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष

सम्पादकीय

देश का सम्मान बढ़ाने के लिये उसकी भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा आर्थिक उन्नति होना आवश्यक है। लेकिन जितनी प्रगति आवश्यक है उस अनुपात में प्रगति की चर्चा भी आवश्यक है। उन्नति की ओर बढ़ते चरणों का बार–बार उल्लेख होने से गौरव की भावना बढ़ती है। राष्ट्र की विशेषताओं तथा राष्ट्रभक्तों के कर्तृत्व को बार–बार स्मरण करने से देशभक्ति के भाव सुदृढ़ होते हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है। इसीलिये देशभक्ति के गीतों की रचना होती है। अनेक गीत तो ऐसे प्रभावी होते हैं कि उनके सुनते ही देशवासी उत्साह, उमंग तथा देशभक्ति के भावों से भर जाते हैं। इसीलिये सभी देश अपना राष्ट्रगान, राष्ट्रीय चिह्न, राष्ट्रीय प्रतिमान निर्धारित करते हैं ताकि सतत प्रेरणा मिलती रहे व जागृति बनी रहे। ऐसे सभी प्रतिमान देशवासियों के लिये एक दिशानिर्देशक होते हैं। अतः हम सभी राष्ट्रीय भावों व प्रतिमानों का बारम्बार स्मरण व उच्चारण करते रहें तो देशभक्ति का वातावरण बनाने में हमारा भी योगदान सिद्ध हो सकेगा।

कुछ काव्यमय

राष्ट्र प्रेम अभिवर्द्धित करना,
है सबका ही मूल ध्येय।
राष्ट्र स्मरण से मिल जाता
सबको वैचारिक पाथेय।
सब प्रतिमान दिशा निर्देशक,
गौरव भरने वाले हैं।
देश भक्ति के भाव जगाकर
सेवा करने वाले हैं।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

जीवन धर्म

आलोक धर्म अर्थात् जीवन में अपना लिखा धर्म। जो आचरण में लाया जाये। हमारे फेफड़े चोबीस घंटे हमारे लिये ऑक्सीजन को पूरे खून में मिलाकर शुद्ध करते हैं, और कार्बन डाइऑक्साईड को बाहर ले जाते है। अभी परसों में गिन रहा था, पसलियाँ होती है–बारह। पाँच पसलियाँ ये छठी पसली से एक और पसली पैदा होती है। यह भगवान ने बना दिया– बाबूड़ा। जब हम दान देते हैं तो वायरलेस मैसेज टू गोड होता है–बाबू। वायरलेस मैसेजे टू गोड का अर्थ है–भगवान को ब्रह्मांड को वायरलेस पहुँच जाता है। जब कहते है ना, कि प्रभु मेरी यह इच्छा पुरी कर दो। ब्रह्मांड कहता है– बेटा, प्रसन्नता रखो, दानशीलता रखो। जो दानशीलता रखते हैं, प्रसन्न होके दान देते हैं। ब्रह्मांड कहता है मांगो, मांगो। मेरे से प्राप्त कर लो। मैं सबकुछ दे सकता हूँ। वहीं ईश्वर आपको और हमारे को अच्छे कार्य करने

के लिये कहता है।

दान, पुण्य का बीज है,
और बीज पाप का लोभ।
शक्ति, ज्ञान का बीज है,
यह मानवता की मोह।।

यह कर सकते हो ना–बाबुड़ा। यह हो सकता है। अभी धर्म की बड़ी – बड़ी बातें महाराज। दया धर्मस्य मूलम्।

निवेदन किया है हमारे पुराणों में, हमारे उपनिषदों में, वेद और वेदांग में। वेद और वेदांग में लिखा है विद्या ददाति विनयम्, और धर्म लगाते है तो होता है विद्या ददाति विनयम् धर्मः। यह धर्म का प्रेक्टिकल स्वरूप है। मार्कण्डेय ऋषि जी को भक्ति की विद्या, ज्ञान की विद्या। भले ही इनके पिताजी ने कहा हो बेटा तेरी उम्र छः साल की ही भगवान ने दी है, पर तू भगवान की भक्ति करना, इनके प्रति समर्पित भाव रखना।

अब सौंप दिया इस जीवन का,
सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में,
और हार तुम्हारे हाथों में।।

और मार्कण्डेय ऋषि ने–

ऊँ नमः शिवाय, ऊँ नमः शिवाय,
ऊँ नमः शिवाय, ऊँ नमः शिवाय।

और काल आया। मार्कण्डेय तुझे मैं लेने आया हूँ। लेकिन मार्कण्डेय ने कहा तू वहीं रूद्र–काल।

मैं कालों के काल महाकाल की भक्ति में हूँ। मेरी भक्ति पूरी होने दो, और भांकर भगवान बड़ी कृपा करके, महाकाले वर भगवान प्रकट हो गये। काल को कहा– अरे काल दूर खड़ा रह। ये मेरा भक्त है।

– कैलाश 'मानव'

गरीबी क्या है

एक छोटा सा प्रसंग मैं आपको सुनाता हूँ जिससे शायद आप और हम समझ पायें कि गरीबी किसे कहते हैं? एक निर्धन व्यक्ति था, उसका नियम था कि जो उसको मिलता था वो खा लेता था, एक दिन उसे एक रुपया ज्यादा मिल गया, उसने सोचा कि मेरी पूर्ति हो गयी है अब जो ज्यादा पैसा मिला है तो मैं किसी अच्छे कार्यो में खर्च कर दूं। दूसरे दिन वो ढूंढता रहा कि ऐसा कोई व्यक्ति मिल जाये तो जिस पर वो पैसा खर्च कर सकें। उसने पड़ोसी से पूछा कि कौन सा अच्छा काम है? उनका एक रुपये में, तुम कौनसा ऐसा काम ढूंढ लोगे, तुम ऐसा कौन सा अच्छा काम करोंगे? किसी गरीब व्यक्ति को दे दो, किसी निर्धन व्यक्ति को दे दो।

वह सब से पूछने लगा कि तुम गरीब हो, कोई भी आदमी अपने को गरीब नहीं मानता, बोले कि हम सब गरीब नहीं है, इतने में सुना कि वहां का राजा अपने पड़ोसी राज्य के राजा पर आक्रमण करने वाला है, उस राजा की धन–सम्पति लूटने के लिए, उसने सोचा कि हमारा राजा वास्तव में बहुत गरीब है, इसलिए पड़ोसी राजा पर कब्जा करने व धन लूटने के लिए चढ़ाई कर रहा है। इसलिए लड़ाई होगी। सैनिकों की जान जायेगी, खून–खराबा होगा। उसने रुपया राजा को देना चाहा। वह रास्ते पर खड़ा हो गया, जहाँ से राजा अपने सैनिकों के साथ गुजरने लगा तो उसी समय वो रुपया राजा को देना चाह। राजा ने पूछा कि ये रूपया क्यों दे रहे हो? इस बात पर उस आदमी ने निर्भय होकर उस राजा से वह बात कह डाली कि मैं रूपया गरीब आदमी को देना चाहता हूँ, राजा ने पूछा कि मैं गरीब? मैंने सुना कि आप पड़ोसी राज्य पर हमला करने वाले हैं। इस युद्ध में लोग मरेंगे, शोषण होगा किस लिए? केवल पैसों के लिए। अगर आपको पैसों के लिए इतने लोगों की मृत्यु करनी है, तो आप जैसे गरीब शायद मेरी नजरों में कोई नहीं। ये सुनकर राजा को ध्यान हो गया, और इस प्रकार से इस गरीब आदमी ने एक रुपये के लिए दो राष्ट्रो को भयंकर युद्ध से बचा लिया। गरीबी का अर्थ आर्थिक, विपन्नता नहीं, गरीबी का अर्थ होता है दिल से विपन्नता, मन मस्तिष्क के भावों से विपन्नता। **– सेवक प्रशान्त भैया**

व्हीलचेयर पर होने के बाद भी मे. जनरल सुनील राजदान का शौर्य

1994 में कश्मीर में आतंकियों के खिलाफ एक अभियान के दौरान मेजर जनरल सुनील राजदान की रीढ़ में गोली लगी। वे चलने लायक नहीं रहे, फिर भी उन्होंने मिशन को कामयाब बनाकर दम लिया। यह अभियान बंधक बनाई गईं 14 लड़कियों को बचाने का था। राजदान तब लेटिनेंट कर्नल थे। मिशन के दौरान राजदान ने दो आतंकियों को मार गिराया। तीसरे आतंकी पर गोली चलाई, मगर बच गया। उसने उनके पेट में गोली मार दी। इससे उनकी रीढ़ की हड्डी टूट गई। राजदान को पता था कि वे फिर कभी पैरों पर खड़े नहीं हो सकेंगे, फिर भी मैदान में डटे रहे। बुरी तरह से घायल राजदान ने रेडियो के जरिये अपने लोगों को सूचना दी और पेट पर पट्टी बांधकर खुद को 16 बोतल फ्लूड चढ़ाया, क्योंकि जहां वो थे वहां दूर–दूर तक कोई डॉक्टर नहीं था। आखिर उनकी बहादुरी काम आई और सभी लड़कियों को छुड़ा लिया गया।

राजदान व्हीलचेयर पर प्रमोशन पाने वाले सेना के पहले अफसर हैं। उन्होंने असिस्टेंट चीफ इंटीग्रेटेड डिफेंस (काउंटर टेररिज्म) के रूप में काम करते हुए लश्कर के आतंकवादियों को खदेड़ने में कामयाबी पाई थी। व्हीलचेयर पर होने के बावजूद उन्होंने अंडमान निकोबार में रहकर आतंकवादियों के खिलाफ रणनीति बनाने में अहम भूमिका निभाई। सेना के कई सम्मान मेजर जनरल सुनील के नाम हो चुके हैं। साल 1996 में सुनील राजदान को आतंकवाद के खिलाफ इस साहसिक शौर्य प्रदर्शन के लिए कीर्ति चक्र से सम्मानित किया गया। उनकी मानसिक क्षमता को देखते हुए सेना ने 2010 में उन्हें मेजर जनरल बनाया गया।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

चैनराज के स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर सुधार होता रहा, इस बीच उदयपुर के शक्तिपीठ मंदिर में अखण्ड जाप जारी रहा, कैलाश भी प्रतिदिन चन्द्रप्रभु मन्दिर में जाकर आराधना करता। यह ईश वन्दना का चमत्कार था या कुछ और, कुछ कह नहीं सकते। मगर तीसरे दिन तो चैनराज अपने बिस्तर से उठ खड़े हुए। डॉक्टर भी उनकी स्थिति देखकर हैरान थे, जिस व्यक्ति के घन्टे–दो घन्टे भी जीने की आस नहीं थी उसके इस तरह स्वस्थ्य हो जाने को वे एक अजूबा ही बता रहे थे।

चैनराज स्वस्थ्य होकर अपने घर लौट आये फिर भी शरीर में कमजोरी तो थी ही। डॉक्टरों ने उन्हें पूर्ण विश्राम की सलाह दी थी। चैनराज की बीमारी और उनके अशक्त हो जाने का असर उनके व्यापार पर भी पड़ा। आय कम होने लगी तो उन्हें चिन्ता हो गई। उन्होंने कैलाश से कहा कि अस्पताल तो लगभग बन गया है मगर इसे चलायेंगे कैसे? इसके लिये भी तो पैसों की आवश्यकता होगी? मेरी आर्थिक स्थिति दिनों दिन कमजोर होती जा रही है।

कैलाश भी उनकी बात सुन विचारमग्न हो उठा मगर निराश नहीं हुआ। जीवन में इतने उतार–चढ़ाव, पग पग पर बाधाएं और उन पर पार पाने का उसे इतना अनुभव था कि वह आश्वस्त था कि कुछ न कुछ तो हो ही जायेगा। हर चीज का भाग्य होता है, यह अस्पताल इतना बन गया है तो हमारे प्रयासों के साथ इसका भाग्य भी कुछ न कुछ कर दिखायेगा। उसने प्रकट रूप में चैनराज से कहा कि आप चिन्ता न करें, कुछ न कुछ हो ही जायगा। **अंश–170**

गुणकारी है नीम

नीम के रूप में प्रकृति ने एक अद्‌भुत वृक्ष विरासत में दिया है। यह पेड़ भारतीय उपमहाद्वीप के शुष्क व अर्द्धशुष्क भागों में तेजी से बढ़ने वाला सदाबहार और असामान्य जलवायु को सहन करने वाला है।

नीम का वैज्ञानिक नाम ऐजाडिरेका इंडिका है। यह मैंजिएसी कुल का वृक्ष है। भारत में इसे विभिन्न प्रदेशों में अलग–अलग नामों से जाना जाता है। संस्त में निम्ब, हिंदी में नीम, मराठी में कडु निंब, बंगाल में निम गाछ, गुजरात में लीमड़ो, तेलगू मे वेप, कन्नड़ में वेड बेबू ओर मलयालम में वीप्पा, अग्रेंजी में मारगोसा व फारसी में आजाद दरख्त–ए–हिंद भी कहते हैं।

इसके अद्‌भुत गुण और इससे बनने वाले उत्पादों के कारण इसे विश्वव्यापी प्रसिद्धि मिली है। नीम के फल मई से जुलाई के मध्य परिपक्व हो जाते है। इसे मुख्यतः बीजों के जरिए लगाया जाता है। यह सूखी, पथरीली रेतीली, उथली, गहरी या चिकनी सभी प्रकार की भूमि में उग सकता है।

नीम अनेक गुणों वाला वृक्ष है। इसके सभी अंग यानी पत्ते, फल, छाल, रस आदि औषधि के रूप में प्रयोग किए जाते है। नीम का उपयोग कई सदियों से सभी कर रहे है पर कुछ बातों से आज की पीढ़ी अनजान है। उन्हें इसके महत्त्व को समझना होगा।

उपचार के रूप में

नीम का उपयोग कई घरेलू और अन्य औषधियों में होता है–

पायरिया में : दांतों के रोगों, विशेषकर पायरिया में नीम की पत्तियों को उबालकर ठंडा कर चबाएं तो राहत मिलती है। प्राचीनकाल से ही नीम की टहनियां दातून के रूप में इस्तेमाल की जाती रही है।

कब्ज में : नीम के फूल गर्म पानी में डालकर मसलें और छान लें। इस पानी को सोते समय पिएं। कब्ज दूर होता है। इसकी कोमल पत्तियों को शहद में मिलाकर या कालीमिर्च के साथ लेने पर पेट के कीड़े मर जाते हैं।

बालों के लिए : नीम की पत्तियां उबालकर ठंडा कर बालों में लगाने पर बालों का झड़ना और सिर में होने वाली फुंसियों में राहत मिलती है। बालों की जड़ों में नीम का तेल लगाकर अंगुलियों से मालिश करने से जूं और लीख नष्ट हो जाती है।

दादः नीम के पत्तों का दही के साथ पीसकर दाद पर लगाने से दाद ठीक होता है।

बिच्छू काटने पर : नीम के पत्तों को पीसकर बिच्छू काटे पर लगाने से राहत मिलती है।

गर्मी के मौसम में भी : नीम कोपलों के रस में मिश्री मिलाकर एक सप्ताह तक सुबह, शाम पीने से गर्मी से राहत मिलती है। नीम के पचांग को पीसकर तलवों पर लेपने से जलन कम होती है।

जोड़ो का दर्द : नीम के तेल की मालिश करने से जोड़ों के दर्द में आराम मिलता है।

दस्त में : सूखी पत्तियां पीसें। इसमें चीनी मिलाकर खाने से आराम मिलता है।

अनुभव अमृतम्

तो भैरव स्कूल पहली बार साईकिल किराए की। पिताजी 1 पैसा रोज का देते थे, किराये की साईकिल भी पहली बार ली। किसी दोस्त ने कहा ऐसा पेड़ल लगा। कहा पेडल को दो–तीन बार घुमा, फिर जैसे ही गाड़ी गति पकड़े बैठ जा। बैठ गये थोड़ी चली, थोड़ी रुकी और अचानक कुछ ऐसा हुआ कि गिरा और हाथ फेक्चर हो गया। और जब बहुत दर्द के मारे रोते– रोते गये तो ताऊजी ने कहा कि तूं पैसा कहाँ से ले गया? साईकिल किराये की ली तो तूने चोरी की क्या? तेरे पास पैसा कहाँ से आया? साईकिल किराये की ली कहाँ से मुफ्त में तो साईकिल किराये कोई नहीं देता। अब एक हाथ तो तेरा वो हुआ, दूसरा हाथ में देख लेता हूँ। पिताजी मुसकुराये थे। कहा मैंने दिया था। उन्हीं दिनों में श्रावण मास का था। अकबर ने बीरबल को पूछा कि बीरबल साल में महीने कितने होते हैं? बोले महीना तो महाराज एक ही होता है। अरे! महीना एक होता? सारे लोग, दुनिया कहती है कि महीने 12 होते हैं। तूं एक कह रहा? आज तू हार गया। बोले महाराज महीना तो श्रावण का ही है। श्रावण निकल गया तो फिर साल में सूखा ही सूखा है।

संगीत मन के पंख लगाये, गीतों से रिमझिम रस बरसाये।
सुर की साधना परमेश्वर की, सुर सधे क्यों ना हम गायें ।।

मूलरूप से गीत का सुर ना सधे क्या गाऊंगा? मैंने सोचा सुर तो सध सकते हैं। भगवान ने जिह्वा दी है। बालते हैं, भूख लग जाती है। कण्ठ निगल जाता है, स्टोमक रूपी महाराज में भोजन चला जाता है। लीवर से 550 तरह के रसायन निकल जाते हैं। हाइड्रोलिक एसिड़ मिलता है। जैसे मथा जा रहा है। भोजन बिल्कुल बारीक पानी जैसा हो गया।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 49 (कैलाश 'मानव')

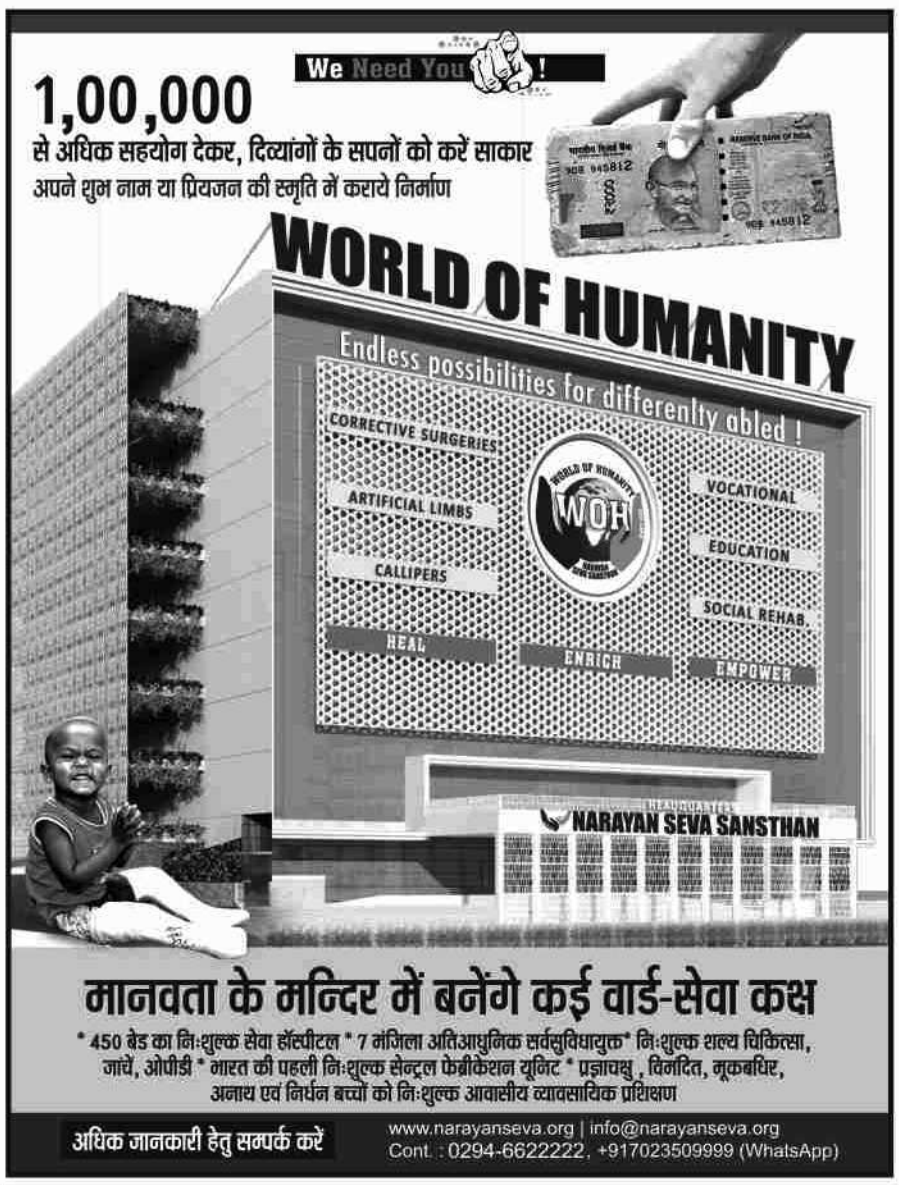

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023